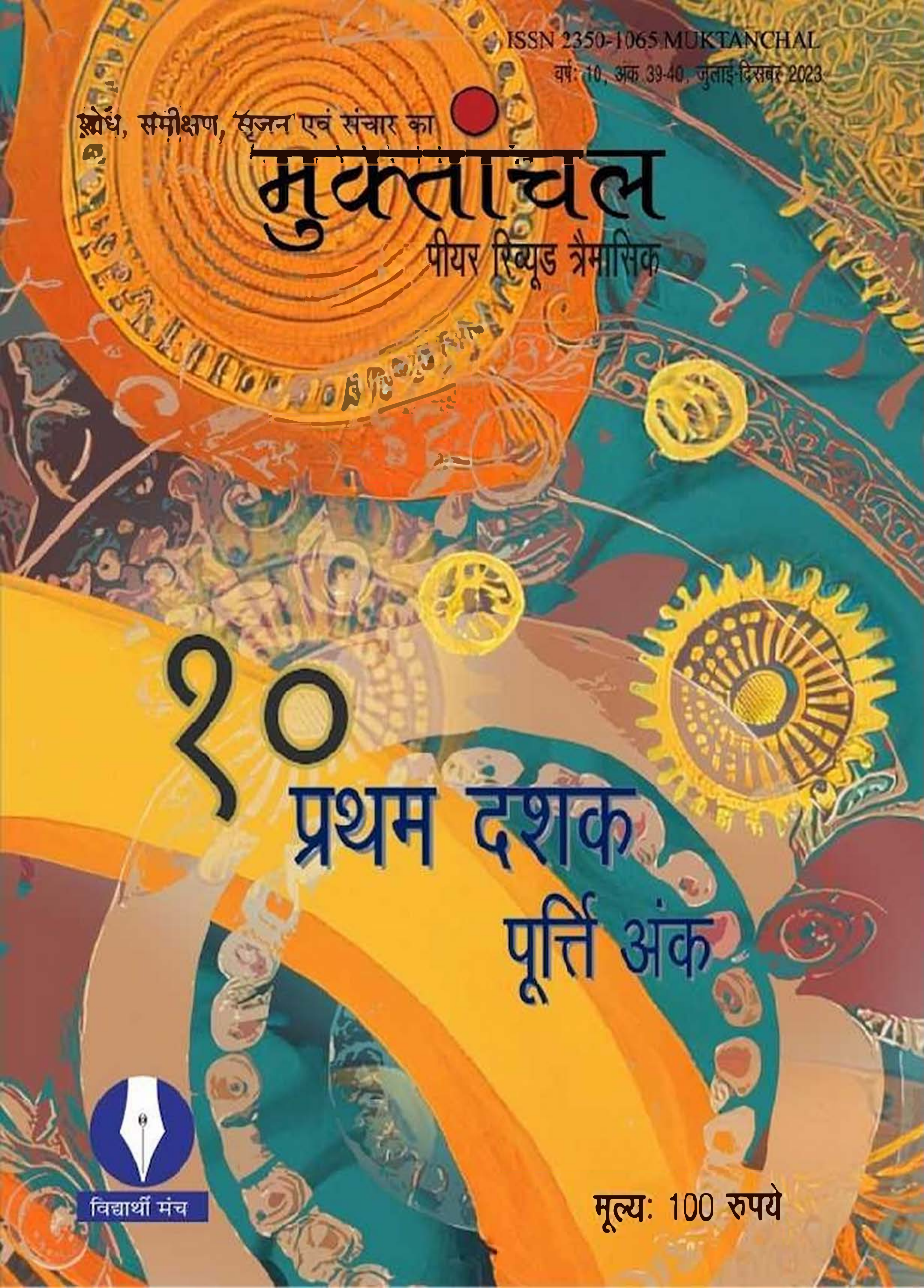

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष: 10, अंक 39-40, जुलाई-दिसंबर 2023

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

१० प्रथम दशक

पूर्त्ति अंक

विद्यार्थी मंच

मूल्य: 100 रुपये

उस पार से......

जोज़फ अर्नाल्ड ट्वानबी

(जन्म : 14 मार्च 1889, मृत्यु : 22 अक्तूबर 1975)

अनुकरण के माध्यम से समाज में जो यांत्रिक कार्य होता है उसमें विपत्ति का भय रहता है। और यह स्पष्ट उस समाज में अधिक रहता है जो गत्यात्मक है बजाय उस समाज के जो सुषुप्त है। अनुकरण की प्रक्रिया का दोष यह है--इस यन्त्रवत संचालन की प्रेरणा बाहर से होती है। यदि आज्ञापालन करने वाले पर छोड़ दिया जाय तो वह अपनी ओर से कभी यह कार्य न करेगा। अनुकरण की क्रिया अपने मन से नहीं होती और इस क्रिया को पूर्ण रूप से सफल करने के लिए आवश्यक है कि उसे रीति-रिवाज या आचार का रूप दे दिया जाय। जैसा कि वास्तव में आदिम समाजों का 'यिन' अवस्थाओं में होता है। किंतु जब रीति की परंपरा टूट जाती है तब तो जो अनुकरण शक्ति पुरातन लोगों के या अपरिवर्तिनीय सामाजिक परंपरा के अवतारों की पूजा में लगाती थी, वह नेताओं की पूजा में लगाई जाती है जो सुंदर भविष्य की ओर ले जाने का सपना दिखाते हैं। इस दशा में समाज का रास्ता भयपूर्ण हो जाता है। और संकट का भय सिर पर सवार रहता है। क्योंकि विकास को सुरक्षित रखने के लिए सदैव स्वेच्छा और स्वाभाविक प्रवृत्ति चाहिए और समुचित अनुकरण के लिए, मशीन के समान स्वचालित होना चाहिए जो विकास के लिए आवश्यक है।

पुस्तक : इतिहास : एक अध्ययन

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-10, अंक - 39-40, जुलाई-दिसंबर 2023

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा
प्रकाशक : विद्यार्थी मंच
प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय
कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव
प्रसार प्रबंधक : रमेश कुमार शर्मा

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : पूर्व कुलपति, हिन्दी विश्वविद्यालय, हावड़ा
डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय
डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर
डॉ. मृत्युंजय पाण्डेय : सुरेंद्रनाथ कॉलेज, कोलकाता
डॉ. विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगबासी कॉलेज
डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल
डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनोद यादव, विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित एवं बलराम साव - 89107 83904

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229
कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)
प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन
प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात
प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)
डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन
सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल
संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070
ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये
सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500 रु.
डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संसार

06 संस्तुति

आलेख

07 सेवाराम त्रिपाठी : हरिशंकर परसाई : अपने समय से मुठभेड़
12 शशिभूषण द्विवेदी : डॉ. रमेश कुंतल मेघ एक विरल प्रतिभा ...
19 डॉ. महात्मा श्रीनाथ पाण्डेय : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की सामाजिक, सांस्कृतिक, चेतना और कबीर
26 योगेश तिवारी : आधुनिक भाषाविज्ञान के जनक–नोम चोम्स्की

अनुशीलन

30 डॉ. पंकज साहा : मृणालिनीः पुराने जीवन-मूल्यों की टूटन एवं नारी-सशक्तिकरण की छटपटाहट
35 रजत सान्याल : 'चारुलता' सत्यजित रे साहब की एक यादगार फिल्म
37 ऋषिकेश राय : मनोहर श्याम जोशी के साहित्य में उत्तर आधुनिक तत्व
46 स्नेहा सिंह : कोरोनाकाल और आभासी-पटल को उजागर करती कहानियाँ

विमर्श

50 राजवंती मान : प्रतिबंधित और गुमनान हिंदी साहित्य
55 डॉ. एस कृष्ण बाबू : शैक्षिक क्षेत्र में साहित्यिक शोधः सीमाएँ, समस्याएँ और संभावनाएँ

शोधार्थी की कलम से

58 मनोज कुमार दास : स्त्री अस्मिता की मौन अभिव्यंजना : सुधा अरोड़ा की कहानियाँ
64 पिंकी झा : 'उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ' में आज का समय
69 पंकज कुमार सिंह : आपातकाल और हिंदी कविता

संस्मृति

73 विनोद साव : आलोचना की अनूठी भंगिमाओं के बीच डॉ. राजेन्द्र मिश्र

कहानी

75 अरुण अर्णव खरे : विला के आँसू
83 मंजुरानी सिंह : सभ्यता का शिकंजा
86 रंजना जायसवाल : तिथि
93 नीरजा हेमेन्द्र : एक छोटी-सी यात्रा...
102 अस्मिता सिंह : बेचारगी

शो ध स मी क्ष ण | सृ ज न | सं चा र

भाषांतर

109 मूल लेखकः रोअल्ड डाहल — खाल
अनुवादक : शुशांत सुप्रिय

पुस्तकायन

114 डॉ. वन्दना गुप्ता : — खरपतवारः 0पितृसत्तात्मक समाज की खोखली अवधारणाओं पर प्रश्नचिह्न लगाती कहानियाँ
118 शशि काण्डपाल : — एक आदिम चरवाहा गाँव की दास्तान
122 मुकेश पोपली : — बेहद खूबसूरत है खूबसूरत मोड़
124 डॉ. अजीत प्रियदर्शी : — जो मुट्ठी में है : जनता के सवालों और स्वप्नों को उजागर करती कविताएँ

व्यंग्य

129 रामस्वरूप दीक्षित : — अक्खड़ संपादक और चापलूस लेखक

कविता

130 नरेश अग्रवाल : — गरीब, स्मारक, पसीज जाता हूँ, बँटवारा, तुम्हारी थकान, कविता न लिख पाया, मित्रता
132 रेणुका अस्थाना : — मकर संक्रांति, मैंने जीना सीख लिया, नव विहान, मन, यादें
133 मीना घुमे : — इच्छाएँ, विश्वास
134 सतीश लोथे : — वो और आप, समय बीचोबीच
136 प्रिया श्रीवास्तव : — गाँव का घर, गगनधरा

प्रवासी कलम

137 चाँदनी सिन्हा — यादों के आइने में, सोच

नई पहल नया कदम

138 अक्षिता शशि साव — बनावट, हिम्मत

अभिमत

139 रूपसिंह चंदेल — मुक्तांचल - 38, लघुकथा विशेषांक
141 पद्माकर व्यास — मुक्तांचल का लघुकथा अंक

गतिविधियाँ

142 आनंद गुप्ता — नीलांबर ने आयोजित किया लिटरेरिया 2023
143 मीरा सिन्हा — बर्मिंघम में साहित्यिक अड्डा
143 चाँदनी सिन्हा — गीतांजलि बहुभाषी साहित्यिक समुदाय की पहली बैठक

परिशिष्ट

144 समीक्षार्थ पुस्तकें प्राप्त हुई

संस्तुति

प्रथम दशक पूर्ति अंक को संस्तुत करते हुए यात्रित होती स्मृतियों के गगन छूते प्राचीर अभिभूत करते हैं कि आखिर कैसे हो पाया यह सब कुछ श्रृंखलाबद्ध और निरन्तर, अपनी धुन में अलग और आजाद, कभी भीड़ में तो कभी अकेले दस्तक देते हुए चलते रहने की आदत में कितनी चोंटें छिपी हुई है। यात्रा की शुरुआत हिन्दी साहित्य के कुछ मेघावी विद्यार्थियों के साथ आरम्भ होती है, वह था वर्ष - 2012। हम हिन्दी साहित्य के तमाम अकादमिक मुद्दों पर बहस चाहते थे--हम चाहते थे कि साहित्य विश्वविद्यालयों के परिसर में दोयम दर्जे का उपेक्षित-सा दीन-हीन विषय होकर ही न रह जाये, ये पेशेवर लेखक और प्रकाशक गठजोड़ से ऊपर उठकर सर्जनात्मक साहित्य - पाठकों की कसौटी पर खड़ा उतर प्रत्येक पाठक एक विद्यार्थी की गरिमा से आविष्ट हो। प्रथमतः हममें विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिन्दी भाषा और साहित्य के पाठ्यक्रम को खंगालना शुरू किया। इस कार्य में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों का एक समूह जुट गया और हम इस काम को मुकम्मल रूप देने के लिए 'विद्यार्थी मंच' के नाम से लगभग तीस सदस्यों को लेकर एक संस्था गठित कर ली और उसे पंजीकृत भी करवा लिया गया। साल भर तक मंसूबे बाँधने के अनन्तर हमने एक आकादमिक पत्रिका की शुरुआत करने की ठान ली। पत्रिका की उद्घघोषक पंक्ति तय कर ली गई। शोध, समीक्षण, सृजन और संचार के खाके में मुक्तांचल ने जनवरी-मार्च 2014 से 2023 के दिसम्बर तक एक-दशक पूरे कर लिए और अब 2024 से दूसरे दशक पर एक मजबूत कदम रख रहा है। 'मुक्तांचल' के उद्घोषित चार शब्दों में से दो शोध और समीक्षा का सीधा सम्बन्ध शोधार्थी विद्यार्थी वर्ग के साथ जुड़ता है अतः, उसके लिए अध्यन-अध्यापन के परिसर में पहुँचना आवश्यक है। 'मुक्तांचल' मुख्य रूप से 'कैम्पस' की पत्रिका है। सृजन और संचार को भी उसी जगत में अपनी जगह बनानी होगी जहाँ से उसकी चर्चा को उन्मान मिले। प्रत्येक लेखक के लेखन का समीक्षक उसका पाठक है जो विद्यार्थी की तरह उसकी रचना से रू-ब-रू होता है, संचार के अन्तर्गत पुस्तकायन, अभिमत, गतिविधियाँ आती हैं जो विविध कोणों को उजागर करने में समर्थ होती हैं। उच्च अध्ययन की संस्थाएँ अपने परिसर में एक परिवेश को रचती हैं, साहित्य जैसे विषय को लेकर दूर तक चलना इसके बिना सम्भव नहीं होता। कोई भी भाषा अपने साहित्य को लेकर आज चिन्तित है, क्योंकि चर्चा-परिचर्चा एवं क्रियाकलापों के अभाव में उसका मृत हो जाना निश्चित ही है। यह दुर्घटना इसलिए लाजिम हो गई है कि साहित्य के संसार में तकलीक एवं विविध विषयों को जैसे-तैसे 'फिट' किया जा रहा है जिससे एक साहित्य का विद्यार्थी 'कनफ़्यूज्ड' हो जाता है कि आखिर साहित्य का सही स्वरूप क्या है और उसके अध्ययन की दिशा किधर होनी चाहिए? लिहाजा, आज साहित्य के सन्दर्भ में इतिहास, दर्शन, विज्ञान और अनुसन्धान को नहीं नकारा जा सकता। साहित्य समावेशी होता है उसके सृजन एवं विश्लेषण में दृष्टिकोण का होना बहुत जरूरी है। सिर्फ तकनीक के बल पर साहित्य का संधान संभव नहीं है। अस्तु, 'मुक्तांचल' के माध्यम से विद्यार्थी मंच एक पुख्ता जमीन की तलाश करेगा जिससे शोध, समीक्षा और सृजन के क्षेत्र में भरपूर रोशनी संचारित हो सके।

मीरा सिन्हा

संपादक